

भारत का राजपत्र

The Gazette of India



असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 101]

नई दिल्ली, चृहस्यतिवार, मार्च 5, 2009 / फाल्गुन 14, 1930

No. 101]

NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 5, 2009 / PHALGUNA 14, 1930

दाखिल्य एवं उद्घोग संशोधन

(दाखिल्य विभाग)

(प्राधिकार से एवं संबद्ध शुल्क, नियमित्यात्मक)

आधिकूचन

नई दिल्ली, 5 मार्च, 2009

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अधिकार बहाने से नियमित्यात्मक विटामिन “ई” के आयातों से संबंधित पाटनरोधी (नियांयिक समीक्षा) जाँच।

सं. 15/10/2008-डीजीएडी:- वह: निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 एवं सीमाशुल्क टैरिफ (प्राप्ति वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए, दिनांक 2-12-2002 की आधिसूचना सं. 14/32/2002-डीजीएडी द्वारा चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अधिकार बहाने से नियमित्यात्मक विटामिन “ई” (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर अनंतिम शुल्क लगाने की सिफारिश की थी और ऐसा अनंतिम शुल्क भारत सरकार द्वारा दिनांक 17-3-2003 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 41/2003 द्वारा लगाया गया था। प्राधिकारी ने नियमित्यात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हुए अपने अंतिम जाँच परिणाम दिनांक 22-8-2003 की अधिसूचना सं. 14/32/2002-डीजीएडी द्वारा जारी किए थे और ऐसा नियमित्यात्मक शुल्क भारत सरकार द्वारा दिनांक 6-10-2003 की अधिसूचना सं. 145/2003 द्वारा लगाया गया था।

2. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपर्युक्त अधिनियम की धारा ५क (5) के अनुसार ऐसर्स मर्क इंडिया लि., शिवसागर एस्टेट, डॉ. एनी बेसेन्ट रोड, करली, मुंबई-400018 से एक विधिवत्त प्रमाणित आवेदन प्राप्त हुआ था, जिसमें संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे अगले धार्त वर्ष तक जारी रखने का अनुरोध इस आधार पर किया गया था कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पाटन जारी रहा है और संबद्ध देशों द्वारा किए गए पाटन के कारण घरेलू उद्योग को निरंतर क्षति हुई है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क को समाप्त करने से पाटन जारी रहेगा अथवा उसकी पुनरावृत्ति होगी अथवा दोनों होंगे; पाटनरोधी (नियांयिक समीक्षा) जांच की शुरूआत करते हुए दिनांक 7-3-2008 को एक सार्वजनिक सूचना सं. 15/10/2008-डीजीएडी जारी की थी, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

प्रक्रिया

3. इस कार्यवाही में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है :

- i. समीक्षा की शुरूआत के उपरांत नियम 6(4) के अनुसरण में प्राधिकारी ने अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से जांच शुरूआत अधिसूचना के साथ प्रश्नावली की प्रतियां संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को भिजवाई थीं।
- ii. नियमावली के अनुसार संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए भारत स्थित घरेलू उद्योग को भी सूचना भिजवाई गई थी।
- iii. नियम 6(2) के अनुसरण में संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली के उत्तर निर्धारित अवधि के भीतर भिजवाने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था।
- iv. नियम 6(4) के अनुसरण में आवश्यक सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत में संबद्ध वस्तुओं के ज्ञात आयातकों एवं उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भिजवाई गई थीं।
- v. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आईबीआईएस आंकड़ों के अतिरिक्त जांच अवधि तथा विगत तीन वर्षों के दौरान किए गए आयातों के सौदेवार आंकड़े वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से मंगवाए गए थे। आईबीआईएस तथा डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सूचना को किसी दोहराव के बिना इस जांच में विश्वसनीय माना गया है।
- vi. व्यापक परिचालन हेतु जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां फिककी, सीआईआई तथा एसोवैम को भी भिजवाई गई थीं।
- vii. संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्धारित प्रश्नावली में उत्तर नहीं भिजवाया है।
- viii. किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने भी जांच शुरूआत अधिसूचना पर कोई प्रतिक्रिया प्रस्तुत नहीं की है।
- ix. घरेलू उद्योग होने के नाते मैसर्स मर्क इंडिया लि. ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। हुई क्षति, इष्टतम उत्पादन लागत, भारत में संबद्ध वस्तुओं के विनिर्माण एवं बिक्री की लागत का आकलन करने और यह अभिनिश्चित करने के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाना घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा; प्राधिकारी ने सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर यथासंभव सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया था;
- x. हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए प्राधिकारी ने दिनांक 16.1.2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था, जिसमें

केवल घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सार्वजनिक सुनवाई के उपरांत उद्योग से प्राप्त लिखित निवेदनों पर इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।

- xii. जांच दिनांक 01.01.2007 से 31.12.2007 तक की जांच अवधि (पीओआई) हेतु की गई थी। तथापि, ज्ञाति के विश्लेषण में वर्ष 2004, 2005, 2006 को भी शामिल किया जाएगा।
- xiii. प्राधिकारी ने दिनांक 3 फरवरी, 2009 को एक प्रकटीकरण विवरण जारी किया था, जिसमें जांच के तथ्यों को प्रकट किया गया था। घरेलू उद्योग को छोड़कर अन्य किसी ने भी इसका उत्तर नहीं दिया। घरेलू उद्योग के विचारों का ब्यौरा इस अधिसूचना में दिया गया है।
- xiv. इस अधिसूचना में *** आवेदक द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना प्रदर्शित करता है, जिसे प्राधिकारी ने नियमावली के अंतर्गत गोपनीय माना है।

विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

4. मूल जांच तथा निर्णायक समीक्षा के अंतर्गत विचाराधीन उत्पाद विटामिन "ई" है, जो एक कार्बनिक रसायन है और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 के अंतर्गत वर्गीकृत है। विटामिन "ई" के सभी रूप अर्थात् विटामिन एसीटेट आईपी/बूससपी/बीपी/ईपी, विटामिन "ई"-एसीटेट 50% ड्राई पाउडर यूएसपी/बीपी/ईपी/आईपी (भेषज/खाद्य ग्रेड), विटामिन "ई"- रूप तथा व्युत्पन्न इस उत्पाद के दायरे के भीतर हैं। इस जांच में शामिल विटामिन-ई संश्लेषण प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है। तथापि यह उत्पाद अपने प्राकृतिक रूप में भी उपलब्ध होता है। इस प्राकृतिक विटामिन "ई" की कीमत संश्लेषित विटामिन "ई" से काफी अधिक होती है। ऐसा विटामिन "ई" इस याचिका के दायरे के भीतर नहीं है। यह उस उत्पाद (जिस पर शुल्क पहले ही लगाया गया है) की निर्णायक समीक्षा है, जो मूल जांच में यथापरिभाषित है। चूंकि इस अवधि के पश्चात इस उत्पाद में कोई उल्लेखनीय विकास अथवा परिवर्तन नहीं हुआ है, अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित की जा रही वस्तु और संबद्ध देशों द्वारा विनिर्मित व निर्यात की जा रही वस्तु पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तुएं हैं।

घरेलू वस्तु की स्थिति तथा दायरा

5. क) मूल जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष मैसर्स मर्क लि. ने याचिका प्रस्तुत की थी।

ख) वर्तमान जांच में भी मैसर्स मर्क लि. ने याचिका दायर की है और मैसर्स सोहन आर्गनिक्स लि. ने याचिका का समर्थन किया है। याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं। याचिकाकर्ता द्वारा जो दावा किया गया है और जिस बात को सिद्ध किया गया है, जांच में कोई तथ्य उसके विप्रस्त नहीं पाया गया है। नियमावली तथा रिकार्ड में दर्ज

सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह अभिमत है कि नियमावली के अर्थ के भीतर, वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ मैसर्स मर्क लिमिटेड घरेलू उद्योग हैं।

पाटन मार्जिन की गणना हेतु प्रयुक्त विधि

पाटन का निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

6. निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार सामान्य मूल्य के आकलन के प्रयोजनार्थ इस परिकल्पना के आधार पर आगे बढ़े हैं कि कोई भी देश, जिसका निर्धारण जांच से पूर्व तीन वर्ष की अवधि में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अथवा किसी डब्ल्यूटीओ सदस्य देश के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में किया गया हो अथवा माना गया हो, वह गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। पिछले तीन वर्षों के डब्ल्यूटीओ सदस्यों जैसे ईयू तथा यूएसए द्वारा पाटनरोधी जांचों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। प्रस्तुत मामले में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है।

7. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैराग्राफ, अनुबंध-1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

(क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

(ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;

(ग) इस प्रकार की फर्म दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और

(घ) विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है।

8. सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी द्वारा प्रश्नावली की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों को भिजवाई गई थीं। किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली तथा बाजार

अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया । अतः गैर बाजार अर्थव्यवस्था अनुसार का खंडन नहीं किया गया है, अतः प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रचालनरत माना है ।

9. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी चीन के निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अनुबंध 1 के पैराग्राफ 1 से 6 में उल्लिखित सिद्धांतों को लागू करने में असमर्थ हैं । अतः चीन जन.गण. से सभी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमानुसार गैर बाजार अर्थव्यवस्था के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार किया गया है ।

10. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा संरचित मूल्य अथवा ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, समान वस्तु के लिए भारत में भुगतान की गई वास्तविक कीमत सहित अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाना अपेक्षित है ।

11. बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में सामान्य मूल्य के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा कोई आंकड़े अथवा सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई । निर्यातकों/उत्पादकों ने भी इस समले में कोई उत्तर नहीं दिया है । अतः प्राधिकारी ने किसी अन्य विकल्प के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण "किसी अन्य समुचित आधार" विधि के माध्यम से किया है ।

सामान्य मूल्य

12. इन परिस्थितियों के अंतर्गत प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण विटामिन "ई" के विनिर्माण हेतु कच्चे माल, घरेलू उद्योग के खपत मानदंडों तथा समुचित लाभ भार विभार करते हुए किया है । उपर्युक्त के संबंध में उपलब्ध सूचना के आधार पर जांच अवधि के दौरान औसत विनिर्मय दर 1 अम.डॉलर= 41.92/- रुपए पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का आकलन 24.07 अम.डॉलर/किग्रा किया गया है ।

निर्यात कीमत

13. निर्यात कीमत का निर्धारण आईबीआईएस लथा डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सौदेवार व्यौरे के आधार पर किया गया है । जांच अवधि के दौरान भारित औसत सीआईएफ कीमत 480.11 रुपए/किग्रा. थी । अंतर्देशीय मालभाड़े, समुद्री मालभाड़े और समुद्री बीमे के समायोजनों के उपरांत कारखाना द्वारा निर्यात कीमत की गणना 10.72 अम.डॉलर प्रति किलोग्राम की गई है ।

पाटन मार्जिन

14. उपर्युक्त निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया है :-

पाटन मार्जिन

अम.डॉलर प्रति किग्रा.

नियातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य	नियात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन का %
चीन जन.गण. से सभी नियातक	24.07	10.72	13.36	124.62

च. क्षति निर्धारण की विधि एवं कारणात्मक संबंध की जांच

क्षति निर्धारण

क्षति का जारी रहना

प्राधिकारी द्वारा जांच

15. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्णायक समीक्षा के प्रयोजनार्थ सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क)(5) से संबंधित प्रावधान निम्नानुसार हैः-

"इस धारा के अंतर्गत लगाया गया पाटनरोधी शुल्क जब तक उसे समाप्त न किया जाए, इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा :

परंतु यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत हो कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह इस प्रकार से लगाए गए शुल्क की अवधि को समय-समय पर आगे और 5 वर्ष के लिए बढ़ा सकती है और आगे की ऐसी अवधि इस प्रकार के समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी !"

16. पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 में निर्णायक समीक्षा की कार्यवाही उपबंधित है। समीक्षा की कार्यवाही हेतु नियम 6,7,8,9/10, 11, 16,17,18,19 तथा 20 के प्रावधानों को लागू किया गया है।

17. इस संबंध में पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के अनुवर्ती प्रभाव की वस्तुपरक जांच किए जाने का प्रावधान है। प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातों में सापेक्ष रूप से या आयातक देश में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत पर प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में

समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से अत्यधिक कीमत कटौती हुई है, अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों में काफी अधिक हास या कीमत में वृद्धि जो कि अथवा काफी अधिक होती, को रोकने के रूप में हुआ है।

18. क्षति के वर्तमान स्तर के आकलन के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने क्षति और पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की उपस्थिति की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रात्मक एवं कीमत प्रभाव तथा कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है।

(क) मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर इसका असर:

19. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है:

संबद्ध देश की आयात मात्रा एवं हिस्सा:

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	2007(जांच अवधि)
आयात में बाजार हिस्सा					
चीन जन.गण.	मी.ट.	45.20	37.70	3.88	5.39
अन्य देश	मी.ट.	194.25	376.16	299.99	502.77
कुल आयात	मी.ट.	239.45	413.86	303.88	508.15
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	173	127	212
आयात में बाजार हिस्सा					
चीन जन.गण.	%	18.88	9.11	1.28	1.06
अन्य देश	%	81.12	90.89	98.72	98.94

20. डीजीसीआईएंडएस और आईबीआईएस ने आयात संबंधी सौदे-वार आंकड़े उपलब्ध कराए हैं, इस जांच परिणाम में विश्लेषण हेतु इन आंकड़ों का सहारा लिया गया है। आंकड़े दर्शाते हैं कि जांच अवधि में संबद्ध देशों से आयातों में कमी हुई है। कुल आयात 239 मी.टन से बढ़कर 508 मी.टन हो गए। आयात में संबद्ध देशों का हिस्सा वर्ष 2004 में 18.88% से घटकर जांच अवधि में 1.06% हो गया।

21. मांग, उत्पादन एवं बाजार हिस्सा

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
मांग	मी.ट.	492	670	557	712
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	136	113	145
घरेलू उद्योग	मी.ट.	92	81	101	106
आबद्ध खपत	मी.ट.	124	124	131	96
अन्य उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	37	51	22	1
आयात-संबद्ध देश	मी.ट.	45	38	4	5

आयात-अन्य देश	मी.ट.	194	376	300	503
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	18.68	12.09	18.07	14.96
आबद्ध खपत	%	25.20	18.50	23.46	13.45
अन्य उत्पादकों की बिक्री	%	7.49	7.66	3.87	0.19
आयात-संबद्ध देश	%	9.18	5.62	0.70	0.76
आयात-अन्य देश	%	39.44	56.12	53.90	70.65
कुल आयात में हिस्सा	%	48.62	61.75	54.60	71.41

22. घरेलू उद्योग की आबद्ध खपत सहित घरेलू बिक्री, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री तथा सभी देशों से सभी आयातों को शामिल करके संबद्ध वस्तु की मांग का परिकलन किया गया है।

23. उपर्युक्त आंकड़ों से यह संकेत मिलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मांग में 45% की वृद्धि हुई। उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 18.68% से घटकर 14.96%, अन्य उत्पादकों का बाजार हिस्सा 7.45% से घटकर 0.19% हो गया। तथापि, यह नोट किया गया है कि कुल आयातों का हिस्सा आधार वर्ष में 48.62% से बढ़कर जांच अवधि में 71.41% हो गया है।

क) घरेलू उद्योग की क्षमता, क्षमता उपयोग तथा उत्पादन

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	300	300	300	300
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100
उत्पादन	मी.ट.	231	257	267	248
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	115	107
क्षमता उपयोग	%	77.16	85.63	88.99	82.63
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	115	107

24. उपर्युक्त आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि वर्ष 2006 तक घरेलू उद्योग अपने क्षमता उपयोग में वृद्धि कर पाया था। तथापि, जांच अवधि में क्षमता उपयोग में गिरावट आई। उत्पादन में भी यही प्रवृत्ति पाई गई है। *

25. संबद्ध वस्तु के उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2005 में 11%, वर्ष 2006 में 15% तथा जांच अवधि में 7% की वृद्धि हुई।

ख) घरेलू उद्योग की बिक्री

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
घरेलू बिक्री	मी.ट.	92	81	101	106
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	109	116
बिक्री-निर्यात	मी.ट.	17	49	34	49
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	290	198	288
आबद्ध खपत	मी.ट.	124	124	131	96

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	105	77
आबद्ध खपत सहित कुल घरेलू बिक्री	मी.ट.	216	205	231	202
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	107	94

26. उपर्युक्त आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग की घरेलू व्यावसायिक बिक्री में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 16% वृद्धि हुई है। तथापि, आबद्ध खपत में वर्ष 2006 तक वृद्धि होते रहने के बाद जांच अवधि में अत्यधिक गिरावट आई है। जांच अवधि में आबद्ध खपत सहित कुल घरेलू बिक्री में आधार वर्ष की तुलना में 6% और वर्ष 2006 की तुलना में 13% गिरावट आई।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों का कीमत प्रभाव

27. संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत हास तथा कीमत अवमूल्यन, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री आय (एनएसआर) तथा क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य से की गई है।

कीमत कटौती

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
नियात कीमत	रु./किग्रा.	506.43	433.41	543.74	480.11
पहुंच मूल्य	रु./किग्रा.	608.73	499.07	612.39	528.60
निवल बिक्री आय	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	87	80	74
कीमत कटौती	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	32	45
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती	% रेंज	40 to 50	45 to 55	10 to 20	25 to 25

कम कीमत पर बिक्री

(मूल्य रु./किग्रा. में)

निवल बिक्री आय	***
क्षतिरहित कीमत	***
पहुंच मूल्य	528.60
कम कीमत पर बिक्री	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
म कीमत पर बिक्री रेंज	100-105

28. जांच अवधि के दौरान पाठित आयातों के पहुंच मूल्य तथा घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत की तुलना करके संबद्ध वस्तुओं की तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय का निर्धारण करते समय करां, छूटों, बट्टों तथा घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कमीशन हेतु समायोजन किया गया है।

29. संबद्ध देश की निर्यात कीमत में वर्ष 2006 में वृद्धि के अपवाद को छोड़कर गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। निर्यात कीमत में वर्ष 2006 में वृद्धि हुई है। तथापि जांच अवधि में उसमें अत्यधिक गिरावट आई है। उसी अवधि के दौरान सीमाशुल्क आधार वर्ष में 20% से घटकर जांच अवधि में 10% हो गया। संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य में जांच अवधि तक गिरावट जारी रही। तथापि वर्ष 2006 में उसमें वृद्धि हुई थी। घरेलू उद्योग का निवल बिक्री कीमत में आधार वर्ष से जांच अवधि तक गिरावट जारी रही। संबद्ध देश से कीकत कटौती वर्ष 2004 और 2005 में बहुत अधिक थी, परंतु वर्ष 2006 में उसमें गिरावट आई थी और जांच अवधि में उसमें फिर वृद्धि हुई थी।

30. कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकलन हेतु एक महत्वपूर्ण संकेतक है; अतः प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत परिकलित करके कम कीमत पर बिक्री की सीमा के निर्धारण हेतु उसकी तुलना पहुंच मूल्य से की। जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर उपर्युक्त रूप से विचार करके घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का आकलन किया गया है। विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री ****% से अधिक थी।

अन्य क्षति मापदंडों की जांच

31. घरेलू उद्योग की मात्रा एवं कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा आयातों की मात्रा एवं मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग एवं घरेलू उद्योग की बिक्री के साथ-साथ विभिन्न संघटकों के बाजार हिस्से के साथ मांग के पैटर्न जैसे प्रमुख क्षति संकेतकों की पूर्ववर्ती खंडों में जांच करने के बाद घरेलू उद्योग को क्षति की उपस्थिति का संकेत कर सकने वाले अन्य आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

(i) नकद प्रवाह पर लाभ तथा वास्तविक एवं पोटेंशियल प्रभाव

(मर्चेन्ट बिक्री)

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
उत्पादकता					
बिक्री लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	88	98
बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	82	78
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(88)	(167)	(397)
लाभ/हानि (पीबीआईटी)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(84)	(178)	(371)
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(90)	(214)	(457)

32. घरेलू उद्योग के रिकॉर्डों से घरेलू उद्योग की व्यावसायिक बिक्रियों तथा आबद्ध स्थानांतरण की लाभप्रदता का विश्लेषण किया गया है। उपर्युक्त तालिका से आबद्ध बिक्री और व्यावसायिक

बिक्री दोनों के संबंध में कंपनी का निष्पादन प्रदर्शित होता है। आबद्ध बिक्रियों की बिक्री कीमत व्यावसायिक बिक्री की कीमतों के समान मानी गई है।

33. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री लागत में केवल 2% की गिरावट आई जबकि बिक्री कीमत में 22% की गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में प्रति किग्रा. लाभ में अत्यधिक गिरावट आई।

34. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभ (पीबीआईटी) में अत्यधिक गिरावट आई।

35. घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कंपनी है, इसलिए उत्पाद के नकद प्रवाह के वास्तविक स्तर का निर्धारण करना संभव नहीं होगा। तथापि, लाभ (कर पश्चात लाभ) में हास की मात्रा जोड़कर नकद लाभ का निर्धारण किया गया है। संयंत्र का पूरी तरह से हास हो जाने के कारण पीबीआईटी में भी यह प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

(ii) रोजगार एवं वेतन

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	99	98
प्रति उत्पादन इकाई हेतु प्रदत्त वेतन	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	110	85

36. याचिकाकर्ता के बहु-उत्पाद कंपनी होने के कारण विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रत्यक्ष तौर पर कर्मचारी आवंटित नहीं है। आधार वर्ष में 100 की तुलना में कर्मचारियों की संख्या वास्तव में घटकर 98 (सूचीबद्ध) हो गई। याचिकाकर्ता प्रति उत्पादन इकाई वेतन को आधार वर्ष में 100 की तुलना में कम करके जांच अवधि में 85 करने में सक्षम रहे हैं।

(iii) उत्पादकता

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
उत्पादन	मी.ट.	231	257	267	248
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	115	107
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	0.87	0.98	1.01	0.95
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	116	109

37. आकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि जांच अवधि में प्रति कर्मचारी उत्पादकता के रूप में परिकलित उत्पादकता में आधार वर्ष की तुलना में 9% सुधार हुआ है परंतु वर्ष 2006 की तुलना में उसमें गिरावट आई है।

मालसूचियां

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
आसूत माल सूची	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	126	124
बिक्री दिवसों की संख्या	दिवस	21	23	25	28

38. माल सूची से संबंधित आंकड़ों से प्रदर्शित होता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि में औसत मालसूची में 24% की वृद्धि हुई है। बिक्री के दिनों की संख्या के रूप में भी मालसूची आधार वर्ष में 21 दिन से बढ़कर जांचाधीन अवधि में 28 दिन हो गई है।

निवेश पर आय तथा पूँजी जुटाने की क्षमता

विवरण	इकाई	2004	2005	2006	जांच अवधि
एनएफए	लाख रुपए	***	***	***	***
कार्यशील पूँजी	लाख रुपए	***	***	***	***
नियोजित पूँजी एनएफए आधार (कुल)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	209	154	185
नियोजित पूँजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(33)	(121)	(211)

39. घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि के दौरान नियोजित पूँजी में वृद्धि की है। कार्यशील पूँजी में वृद्धि के कारण नियोजित पूँजी में वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि में कुल नियोजित पूँजी में 85% की वृद्धि हुई थी। संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान नियोजित पूँजी पर आय ऋणात्मक थी। सूचीबद्ध रूप में नियोजित पूँजी पर आय आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि में 111% तक कम हो गई थी।

(VI) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

40. संबद्ध देश से निर्यात कीमतों के मूल्यांकन से प्रदर्शित होता है कि पीओआई में कीमतों आधार वर्ष की कीमतों के समकक्ष थीं लेकिन पूर्ववर्ती वर्ष में उसमें गिरावट आई थी। तथापि आधार वर्ष से पीओआई तक सीमाशुल्क में गिरावट होती रही है। वर्ष 2004 में 20% से गिरकर यह पीओआई में 10% रह गई थी। आधार वर्ष से पीओआई तक संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य में गिरावट आई।

(VII) वृद्धि

41. उत्पादन, क्षमता उपयोग, आरओआई, वस्तु सूची, नकद लाभ, पीबीआईटी, उत्पादकता में नकरात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है। घरेलू उद्योग की व्यावसायिक बिक्री में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है।

अन्य ज्ञात कारक

अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा तथा कीमतें

42. यह देखा गया है कि वर्ष 2004 में अन्य देशों (चीन से इतर) से कुल आयात 194 मी.टन के थे जो जांचाधीन अवधि में बढ़कर 503 मी.टन हो गए थे। अन्य देशों (शुल्क न लगाने वाले), जहां आयातों में वास्तव में वृद्धि हुई है, से हुए आयात पाटित कीमतों पर हुए प्रतीत होते हैं।

मांग में कमी और/अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

43. आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में 45% की वृद्धि हुई है। अतः मांग में कमी वह संभावित कारण नहीं हो सकता जो घरेलू उत्पादन के निष्पादन को प्रभावित कर सके।

विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

44. संबद्ध वस्तु का मुक्त रूप से आयात किया जा सकता है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां मौजूद नहीं हैं। अतः यह भी घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है।

प्रौद्योगिकी का विकास तथा निर्यात निष्पादन

45. उत्पाद के उत्पादन हेतु घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी और संबद्ध देश में उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी समान है। प्रौद्योगिकी का विकास घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित नहीं कर सकता।

46. घरेलू उद्योग की निर्यात गतिविधियां नगण्य हैं। आधार वर्ष की तुलना में जांचाधीन अवधि में निर्यात बिक्री में वृद्धि हुई है। तथापि, क्षति निर्धारण के लिए केवल घरेलू बिक्री और आबद्ध खपत को ध्यान में रखा गया है। अतः निर्यात निष्पादन को घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित करने वाला कारक नहीं माना जा सकता।

47. राष्ट्रीय भेषज कीमत निर्धारण प्राधिकारण (एनपीपीए) द्वारा नियंत्रित यह उत्पाद औषधि कीमत नियंत्रण आदेश (डीपीसीओ) के अंतर्गत शामिल है। एनपीपीए द्वारा निर्धारित डीपीसीओ कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से बहुत कम है। अतः कुछ हद तक क्षति के लिए कम डीपीसीओ कीमत को दोषी ठहराया जा सकता है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

विवरण	इकाई	जांच अवधि
पहुंच मूल्य	रु./किग्रा.	528.60
क्षतिरहित कीमत	रु./किग्रा.	***
डीपीसीओ कीमत	रु./किग्रा.	791.00
क्षति मार्जिन (डीपीसीओ कीमत के कारण)	रु./किग्रा.	***
क्षति मार्जिन (कम कीमत पर आयात के कारण)	रु./किग्रा.	***

48 कारणात्मक संबंध

48.1 क्षति के जारी रहने या पुनरावृत्ति की संभावना

मौजूदा जांच एक समीक्षा जांच है और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इस आशय की जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति की संभावना है। इस मामले में चूंकि पाटित आयात जारी हैं, यद्यपि उसमें कमी आई है, अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इस आशय की जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति की संभावना है। यद्यपि इस प्रवृत्ति में कमी आई है तथापि पिछले कई वर्षों से संबद्ध देश से निर्यातक तथा उत्पादक भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात कर रहे हैं। वर्तमान पाटन मार्जिन अत्यधिक है। पिछली जांच में भी पाटन मार्जिन बहुत अधिक था। ऐसी स्थिति में यह मानने का कोई औचित्य नहीं है कि शुल्क की समाप्ति से पाटन में वृद्धि नहीं होगी। हालांकि पिछले पैराग्राफों में दिए गए आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि आधार वर्ष की तुलना में संबद्ध देश से आयातों की मात्रा में काफी कमी आई है। चीन में संबद्ध वस्तुओं के बढ़ी मात्रा में उत्पादन, उनकी निर्यातोंनुखता और भारत में संबद्ध वस्तु की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए पाटनरोधी शुल्क में कमी अथवा उसकी समाप्ति से पाटित आयातों में वृद्धि होने की पूरी संभावना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

48.2 पाटन की संभावना

निर्णयक समीक्षा जांच में पाटन की संभावना की जांच के लिए प्राधिकारी वही पद्धति एवं प्रक्रिया अपनाएंगे जो मूल जांचों में अपनाई जाती हैं। अद्यतन अवधि के लिए पाटन मार्जिन की भी पुनर्गणना की जाती है।

48.3 मौजूदा एवं विगत पाटन मार्जिन का स्तर

पिछली जांच में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन और अब आकलित पाटन मार्जिन से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि पाटित कीमतों पर निर्यात जारी रहे और पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से इसके जारी रहने की संभावना है। इसके अतिरिक्त क्षति अवधि के दौरान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में अत्यधिक कीमत कटौती के कारण आयातों की मात्रा में और अधिक वृद्धि होने की संभावना है।

48.4 भारतीय बाजार का कीमत आकर्षण

चीन द्वारा भारत को जिस कीमत पर सामग्री का निर्यात किया जा रहा है वह पाटन के जारी रहने का संकेतक है। पहुंच कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है। अतः पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से चीन के उत्पादकों के लिए भारतीय कीमतें अत्यधिक आकर्षक बन जाएंगी और इस बात की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाएगी कि भारतीय उष्मोक्ता बढ़ती मांग के कारण अत्यधिक आयत करेंगे।

48.5 चीन की निर्यातोन्मुखता

प्राधिकारी ने विश्व को चीन के निर्यातों के संबंध में वर्ल्ड ट्रेड एटलस से निर्यात आंकड़े प्राप्त किए हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि जांचाधीन अवधि के दौरान चीन ने विश्व भर को 29000 मी.टन संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। पूरे विश्व को किए गए यह निर्यात वर्ष 2005 में 23954, वर्ष 2006 में 28434 तथा वर्ष 2007 में 29163 मी.टन रहे। इससे पूर्व वर्ष 2005 की तुलना में वर्ष 2006 में 18.7% की वृद्धि तथा वर्ष 2006 की तुलना में वर्ष 2007 में 2.56% की वृद्धि दृष्टिगत होती है। वर्ष 2005 की तुलना में जांचाधीन अवधि में निर्यात कीमत में लगभग 5% की गिरावट (5.91 डॉ. प्रति किग्रा. से गिरकर जांचाधीन अवधि में 5.63 डा. प्रति किग्रा.) प्रदर्शित होती है। इस परिस्थिति में यदि संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाए तो चीन से संबद्ध वस्तु के निर्यात हेतु भारत आकर्षक गंतव्य स्थान बन जाएगा।

49. अंतिम जांच परिणामः

उठाए गए विवादों, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी के समक्ष हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत अनुरोधों के जरिए अथवा अन्यथा रूप से उपर्युक्त परिणामों में रिकॉर्ड किए गए तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और मौजूदा तथा संभावित पाटन एवं क्षति की स्थिति और पाटन तथा क्षति के जरी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति की संभावना के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष देते हैं कि:

- i) पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुएं भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही हैं और चीन से आयातित संबद्ध वस्तुओं का पाटन मार्जिन उल्लेखनीय तथा न्यूनतम से अधिक है।
- ii) संबद्ध वस्तु के पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में आने की संभावना है और चीन से आयातों से संबंधित पाटन मार्जिन उल्लेखनीय और न्यूनतम से अधिक होगा।
- iii) मौजूदा उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध वस्तु के पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में आने की संभावना है।
- iv) घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है। मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने और उसमें वृद्धि होने की संभावना है।

50 भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

50.1 प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लागू करने से भरत में उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है। तथापि पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी बल्कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन से मिलने वाले अनुचित लाभ समाप्त हो जाएंगे। घरेलू उद्योग के हास पर नियंत्रण लगेगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के लिए और अधिक विकल्प मिलेंगे। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होगा और इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ताओं हेतु दो या अधिक आपूर्ति के क्षेत्र मौजूद रहेंगे।

50.2 सामान्यत: पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार पद्धति द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की स्थिति जो देश के सामान्य हित में है, बहाल की जा सके। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होगा और इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।

51. सिफारिशें

51.1 यह निष्कर्ष देने के बाद कि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन से आयातों के कारण पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा बहाल होने की संभावना है, प्राधिकारी का विचार है कि चीन से आयातों के संबंध में उपाय लागू किए जाने की आवश्यकता है। क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना याचिकार्ता कंपनी की जांच अवधि हेतु निर्धारित क्षतिरहित कीमत से की जाती है।

51.2 प्राधिकरण द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क संबंधी नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन जो भी कम हो के बराबर पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके। तदनुसार चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर नीचे तालिका के कॉलम 9 में दर्शाई गई राशि तथा पहुंच मूल्य के अंतर के बीच पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

क्र.सं.	उप शीर्ष या टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	नियात का देश	उत्पादक	नियातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	2936 28 00 2309 90	सभी रूपों में विटामिन ई	100%	चीन जनवादी गणराज्य	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई नियातक	25.54	किग्रा.	अम.डॉलर
2	2936 28 00 2309 90	विटामिन ई एसिटेट	100%	कोई देश	चीन जनवादी गणराज्य	कोई उत्पादक	कोई नियातक.	25.54	किग्रा.	अम.डॉलर

टिप्पणी:- कॉलम (4) में विनिर्दिष्ट सांदरण से इतर के लिए उपर्युक्त कॉलम (9) के प्रयोजनार्थ राशि की गणना यथानुपात आधार पर की जाएगी।

52. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क विभाग द्वारा सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा जिसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3,3क, 8 ख, 9 और 9क के अंतर्गत शामिल शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

53. इस सिफारिश के परिणामस्वरूप केंद्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th March, 2009

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-Dumping (Sunset Review) investigations concerning imports of Vitamin "E" originating in or exported from China PR.

No. 15/10/2008-DGAD.— Whereas the Designated Authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, recommended imposition of provisional duty vide Notification No. 14/32/2002-DGAD dated 2.12.2002 on imports of Vitamin 'E' (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred as subject country) and such provisional duty was imposed by the Govt. of India vide Customs Notification No. 41/2003 dated 17.03.2003. The Authority issued its Final findings recommending imposition of definitive Anti Dumping Duty, vide Notification No. 14/32/2002-DGAD dated 22.08.2003 and such definitive duty was imposed by the Govt. of India vide Customs Notification No. 145/2003 dated 6.10.2003.

2. The Designated Authority in terms of section 9A (5) of said Act. received a duly substantiated application from M/s. Merck Ltd., Shiv Sagar Estate 'A', Dr. Annie Besant Road, Worli, Mumbai-400018 requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that the dumping had continued in spite of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from subject country and the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject country. It was also claimed that expiry of measure against the subject country would likely to result in continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The Designated Authority issued a Public Notice No. 15/10/2008-DGAD dated 7.03.2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Sunset Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping, injury or both.

PROCEDURE

3. In these proceedings, the procedure described below has been followed:

- i. After initiation of the review, the Authority sent questionnaires, along with the initiation notification, to the known exporters/producers in the subject country in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information.
- ii. Notices were also sent to the domestic industry in India seeking relevant information in accordance with the Rules;

- iii. The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iv. Questionnaires were sent to the known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4),
- v. Transaction-wise data of imports for the period of investigation and preceding three years were called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) in addition to the data of IBIS provided by the domestic industry. Both the information of IBIS and DGC&IS, without overlap, have been relied upon in this investigation;
- vi. Copies of the initiation notification were also sent to FICCI, CII and ASSOCHAM for wider circulation.
- vii. None of the exporters from subject country have responded to the Designated Authority with prescribed questionnaire response.
- viii. No other interested parties filed their response to the initiation notification.
- ix. M/s Merck Ltd, being the domestic industry, submitted the information/data. The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- x. The Authority held a public hearing on 16.01.2009 to hear the interested parties orally, which was attended to by the representatives of domestic industry only. The written submissions received from the domestic industry subsequent to the public hearing have been considered in this findings;
- xi. Investigations were carried out for the period of investigation (POI) from 01.01.2007 to 31.12.2007. However, injury analysis shall cover the years 2004, 2005, 2006.
- xii. The authority had issued a disclosure statement on 3rd February, 2009 disclosing therein the facts of the investigation. None other than the domestic industry had replied to the same. The views of the domestic industry are dealt in this notification.
- xiii. *** in this notification represents information furnished by the applicant on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.

PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 4. The product under consideration in the original investigation as well as Sunset Review is Vitamin 'E'. Vitamin 'E', is an organic chemical and has been classified under Chapter

23 and 29 of the Customs Tariff Act. All forms of Vitamin 'E' i.e Vitamin 'E' Acetate IP/USP/BP/EP, Vitamin 'E' Acetate 50% Dry Powder USP/BP/EP/IP (Pharma/Food Grade), Vitamin 'E' – Forms & Derivatives, are within the scope of the product. Vitamin-E covered in this investigation is obtained through synthetic process. However, the product is available in its natural form also. This natural Vitamin-E is priced much higher than the synthetic Vitamin-E. Such Vitamin-E is not within the scope of the present petition. This is sunset review of the product (against which duty is already in force) as defined in the original investigation. As there has been no significant development or change in the product during the period thereafter, the Authority holds that the goods being manufactured by the domestic industry and the goods being manufactured and exported from subject country are like article as per Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules.

Standing and scope of the Domestic Industry

5. a) In the original investigations, M/s Merck Ltd. had filed the petition before the Designated Authority.

b) In the present investigation also M/s Merck Ltd has filed the petition and M/s. Soham Organics Limited has supported the petition. The petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Anti Dumping Rules. The investigation has not shown any fact to the contrary as to what has been claimed and established by the petitioner. Having regard to the Rules and information on record, the Authority holds that M/s Merck Ltd. constitutes domestic industry for the purpose of the present investigations within the meaning of the Rules.

METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN

Dumping Determination: Normal Value, Export Price and Dumping Margin

6. The Designated Authority, as per para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules for the purpose of assessing the normal value proceeded with the presumption that any country that has been determined to be or has been treated as a non-market economy for the purposes of anti-dumping investigations by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three years period preceding the investigation is a non-market economy country. In the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by WTO members such as EU and USA. In the instant case, China PR has been treated as a non-market economy country.

7. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove the contrary. The exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China were required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and

- demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
 - d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

8. The Authority sent copies of the questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value. No exporters/producer responded to the Exporter's and Market Economy Treatment (MET) questionnaire. Hence, the presumption of non-market economy remains unrebutted, therefore, the Authority has proceeded by treating the exporters/producers in China PR as operating under non-market economy.

9. In view of the above, the Authority is unable to apply the principles set out in paragraph 1 to 6 of Annexure 1 for determination of normal value for the Chinese exporters. Therefore, the normal value in respect of all exporters/producers from China PR is determined as per Rules relating to non-market economy as contained in para 7 of Annexure 1 of AD Rules.

10. As per para 7 of Annexure 1 of AD Rules, the Authority is required to determine normal value on the basis of 'price or constructed value in the market economy third country or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product.'

11. No data or information was made available by the domestic industry about normal value in market economy third country. Exporters/Producers have also not responded in this case. The Authority, therefore, in absence of any other option, has determined the normal value by resorting to the method 'any other reasonable basis'.

Normal Value

12. Under the circumstances, the authority has constructed the normal value by considering the raw material for manufacture of Vitamin "E", the consumption norms of the domestic industry and reasonable profit. Based on above information available, the normal value has been calculated USD 24.07/kg. by considering the average exchange rate during the POI of 1USD=Rs.41.92/-

Export Price

13. The export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by IBIS and DGCI&S. During POI, the weighted average CIF price was Rs.480.11/kg (US\$11.45/kg.). After making adjustments on account of inland freight, ocean freight and marine insurance, the ex-factory export price has been calculated as US\$ 10.72. per KG.

Dumping Margin

14. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority determined the dumping margin as under:

Dumping Margin

USD/KG

Exporter/Producer	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
All exporters from China PR	24.07	10.72	13.36	124.62

F. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

INJURY DETERMINATION

CONTINUATION OF INJURY

Examination by the Authority

15. The Authority has taken note that for the sunset review, the relevant provisions of Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act read as under:

"The anti-dumping duty imposed under this section shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition:

Provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension."

16. Rule 23 of the Anti-dumping Rules provide for procedure for conducting sunset review. For conducting the review, the provisions of Rule 6,7,8,9/10, 11, 16,17,18,19 and 20 have been made applicable.

17. In this regard Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

18. For the purpose of assessing present state of injury, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

(A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:

19. The effects of volume of dumped imports from subject country have been examined as follows:

Import volumes and share of the subject country:

Particulars	Unit	2004	2005	2006	2007(POI)
Market share in Imports					
China PR	MT	45.20	37.70	3.88	5.39
Other Countries	MT	194.25	376.16	299.99	502.77
Total Imports	MT	239.45	413.86	303.88	508.15
Trend	Indexed	100	173	127	212
Market share in Imports					
China PR	%	18.88	9.11	1.28	1.06
Other Countries	%	81.12	90.89	98.72	98.94.

20. The DGCI&S and IBIS has provided transaction-wise data on imports, the same has been relied on for analysis in this finding. The data shows that imports from subject countries have reduced in POI. The total imports rose from 239 MT to 508 MT. The share in imports of subject countries has declined from 18.88% in 2004 to 1.06% in POI.

21. Demand, Production and Market Shares

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Demand	MT.	492	670	557	712
Trend	Indexed	100	136	113	145
Domestic Industry	MT.	92	81	101	106
Captive consumption	MT	124	124	131	96
Sale of other producers	MT.	37	51	22	1
Imports – subject country	MT.	45	38	4	5
Imports – other countries	MT	194	376	300	503
Market Share in demand					
Domestic Industry	%	18.68	12.09	18.07	14.96
Captive consumption	%	25.20	18.50	23.46	13.45
Sale of other producers	%	7.49	7.66	3.87	0.19
Imports – subject country	%	9.18	5.62	0.70	0.76
Imports – other countries	%	39.44	56.12	53.90	70.65
Share of total imports	%	48.62	61.75	54.60	71.41

22. The demand of the subject goods has been calculated by addition of domestic sales including captive consumption of the domestic industry, sales of the other Indian producers and all imports from all countries.

23. The above data indicate that demand grew by 45% in POI as compared to base year. During the same period, the market share of domestic industry declined from 18.68% to 14.96%, the share of other producers which was 7.49% declined to 0.19%. However, it is noted that the share of total imports has increased from 48.62% in base year to 71.41% in the POI.

a) Capacity, Capacity Utilization and Production of the Domestic Industry

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Capacity	MT	300	300	300	300
Trends	Indexed	100	100	100	100
Production	MT	231	257	267	248
Trend	Indexed	100	111	115	107
Capacity Utilization	%	77.16	85.63	88.99	82.63
Trend	Indexed	100	111	115	107

24. The above data shows that the domestic industry was able to increase its capacity utilization till 2006. However, capacity utilization declined in POI. The same trend was found in production also.

25. The production of the subject goods grew by 11% in 2005, 15% in 2006 and 7% in POI as compared to base year.

b) Sales of Domestic Industry

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Domestic sales	MT	92	84	101	106
Trend	Indexed	100	88	109	116
Sales - Exports	MT	17	49	34	49
Trend	Indexed	100	290	198	288
Captive consumption	MT	124	124	131	96
Trend	Indexed	100	100	105	77
Total domestic Sales including captive consumption.	MT	216	205	231	202
Trend	Indexed	100	95	107	94

26. The above data shows that domestic merchant sale of the domestic industry have increased by 16% in POI as compared to base year. The captive consumption, however, has significantly declined in POI after increasing till 2006. The total domestic sale including captive consumption declined by 6% in POI as compared to base year and by 13% as compared to 2006.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

27. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports from the subject country have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry (worked out on the basis of the costing information of the domestic industry) have been compared with landed value of imports from the subject countries.

Price Undercutting

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Export Price	Rs./KG	506.43	433.41	543.74	480.11
Landed Value	Rs./KG	608.73	499.07	612.39	528.60
Net Sales Realization	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	87	80	74
Price Undercutting	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	99	32	45
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	40 to 50	45 to 55	10 to 20	25 to 25

Price Underselling

(Value in Rs./KG)

Net Sales Realisation	***
Non Injurious Price	***
Landed Value	528.60
Price Underselling	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	100-105

28. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, the rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted.

29. The export price from the subject country has shown declining trend with an exception of increase in 2006. The export price has increased in 2006, however, there was significant decline in the POI. During the same period, the customs duty declined from 20% in base year to 10% in POI. The landed value from the subject countries continued to decline till POI, however, there was increase in 2006. The net selling price of the domestic industry continued to decline from base year to POI. The price undercutting from the subject countries was significant in 2004 and 2005 but declined in 2006 but further increased in POI.

30. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic industry by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The analysis shows that the underselling during POI was more than ***%.

Examination of other Injury Parameters

31. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

(i) Profits and Actual and Potential Effects on Cash Flow

(Merchant sale)

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Profitability					
Cost of sales	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	88	88	98
Selling Price	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	88	82	78
Profit/ Loss	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(88)	(167)	(397)
Profit/Loss(PBIT)	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(84)	(178)	(371)
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(90)	(214)	(457)

32. The profitability of the merchant sales and captive transfer of the domestic industry has been analyzed from the records of the domestic industry. The above table shows the performance of the company as regards both captive sales and merchant sales. Selling price of captive sales has been assumed to be same as merchant sales.

33. The data shows that the cost of sales of declined by only 2% where as selling price declined by 22% POI as compared to base year as a result profit per KG declined significantly in POI as compared to base year.

34. The profit (PBIT) declined significantly in POI as compared to base year.

35. Domestic industry is a multi-product company therefore it was not possible to determine the actual magnitude of cash-flow of the product. However, the cash profit has been determined by addition of amount of depreciation to the profit (profit before tax). The trend shows the same trend of PBIT, plant being almost fully depreciated.

(ii) Employment and Wages

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	99	99	98
Wages paid per unit of production	Rs./KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	81	110	85

36. The petitioner being multi Product Company employees are not directly allocated to product under consideration. No. of employees actually declined to 98 (indexed) as compared

to 100 of the base year. Petitioner has been able to bring down the wages per unit of cost of production from 100 in base year to 85 in POI.

(iii) Productivity

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Production	MT	231	257	267	248
Trend	Indexed	100	111	115	107
Productivity per employee	MT	0.87	0.98	1.01	0.95
Trend	Indexed	100	112	116	109

37. The data shows that productivity calculated as a production per employee has improved by 9% in POI as compared to base year but declined as compared to 2006.

Inventories

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
Average inventories	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	126	124
No. of days sales	Days	21	23	25	28

38. The data on inventory shows that average inventory has increased by 24% in POI as compared to base year. Inventory in terms of no. of day's sales also increased from 21 days in base year to 28 days in POI.

Return on Investment and Ability to Raise Capital

Particulars	Unit	2004	2005	2006	POI
NFA	Rs. Lacs	***	***	***	***
Working Capital	Rs. Lacs	***	***	***	***
Capital Employed- NFA Basis (Total)	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	209	154	185
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(33)	(121)	(211)

39. The domestic industry has increased the capital employed during POI as compared to base year. The increase in capital employed was on account of increase in working capital .The total capital employed increased by 85% during POI as compared to the base year. The return on capital employed was negative through out the injury period. In indexed form, the return on capital employed declined to 111% in POI as compared to base year.

(VI) Factors affecting prices

40. Evaluation of export prices from subject country shows that the prices in POI were at same level as of the base year but declined as regards immediate preceding year. The customs duty has, however, been declining from base year to POI. From 20% in 2004 it declined to 10% during POI. The landed value of the subject goods declined from base year to POI.

(VII) Growth

41. The production, capacity utilization, ROI, inventories, cash profit, PBIT, productivity shows negative growth. Merchant Sales of the domestic industry shows positive growth.

OTHERS KNOWN FACTORS

Volume and prices of imports from other sources

42. It has been seen that total Imports from other countries (than china) increased from 194 MT in 2004 to 503 MT in POI. The imports from other countries (not attracting duty) where the imports have actually increased, apparently appears to be at dumped prices.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

43. Demand of the product under consideration has increased by 45% during POI as compared to base year. Contraction in demand, therefore, is not a possible reason, which could be affecting the performance of the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

44. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not be reason affecting the performance of the domestic industry.

Development of technology and export performance

45. Technology for production of the product is same for domestic industry and as used by the producers in the subject countries. Development in technology is not a factor which could affect the performance of the domestic industry.

46. The domestic industry has very small export activity. The export sale has increased in POI as compared to base year. However, for determination of injury only domestic sales and captive consumption has been taken into consideration. The export performance, therefore, cannot be considered a factor affecting the performance of the domestic industry.

47. The product is covered under Drugs price controlled order (DPCO) as controlled by National Pharmaceutical Pricing Authority (NPPA). The DPCO price prescribed by NPPA is much below the non injurious price of the domestic industry, hence some part of injury may be attributed to lower DPCO price as can be seen from the table below.

Particulars	Unit	POI
Landed Value	Rs./KG	528.60
Non Injurious price	Rs./KG	***
DPCO price	Rs./KG	791.00
Injury Margin (attributed to DPCO price)	Rs./KG	***
Injury Margin (attributed to Low price imports)	Rs./KG	***

48 CAUSAL LINK

48.1 Likelihood of continuation or recurrence of injury

The present investigation is a review investigation and the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In this case, though declining, as there are continued dumped imports, the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product. Though in a declining trend, the exporters and producers from the subject country are exporting subject goods to India for the past several years. The current dumping margin is very significant. In the previously concluded investigation also dumping margin was significant. In such a situation, there is no reason to believe that the dumping will not intensify with the revocation of duty. Although from the data in the preceding paragraphs, it is evident that the volume of imports from the subject country has reduced much as compared to the base year. Considering the huge production of the subject goods in China and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood any reduction or revocation of the anti-dumping duty may lead to spurt in the dumped imports injuring the domestic industries.

48.2 Likelihood of Dumping

To examine the likelihood of dumping in a sunset review investigation, the Authority applies the same methodology and the procedure as are applied in original investigations. The dumping margin is also recalculated for the updated period.

48.3 Level of current and past dumping margin

Considering the dumping margin determined by the Authority in the previous investigation and the dumping margin now assessed, it is quite evident that the exports were continued to be made at dumping prices and is likely to continue with revocation of anti dumping duties. Further, the volume of imports is likely to increase further in the event of revocation of anti dumping duties, given the significant price undercutting during the injury period.

48.4 Price attractiveness of Indian market

The price at which material is being exported by China to India is also an indicator of the continuation of dumping. At the landed price there is significant undercutting. Thus, with the revocation of anti dumping duties, the Indian prices would be too attractive to the Chinese Producers and there is strong likelihood that Indian Consumers would import substantially due to increasing demand.

48.5 Export orientation of China

The Authority has procured exports data from the World Trade Atlas in respect of China's exports to world. It is observed from the data that China has exported more than 29000 MT of

subject goods during POI to world over. The exports to world over have been 23954 MT in 2005, 28434 MT in 2006 and 29163 MT in 2007. This shows an increase of 18.7% in 2006 over 2005 and 2.56% in 2007 over 2006. The export price has shown a decline of approx 5% in POI over 2005 (from \$5.91 per kg to \$5.63 per kg in POI). In this scenario if anti dumping duty on the subject goods are revoked, India will be an attractive destination for the subject goods from China.

49. FINAL FINDINGS:

Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margins of the subject goods imported from China is substantial and above de-minimis.
- ii) The subject goods are likely to enter the Indian market at dumped prices and the likely dumping margins in respect of imports from China will be substantial and above de-minimis.
- iii) The subject goods are likely to enter Indian market at dumped prices, should the present measures be withdrawn.
- iv) The situation of domestic industry continues to be fragile. Further, should the present anti dumping duties be revoked, injury to the domestic industry is likely to continue and intensify.

50 Indian industry's interest and other issues

50.1 The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practice, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of the anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the products to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

50.2 The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

51. Recommendations

51.1 Having concluded that the situation of the domestic industry continues to be fragile and there is likelihood of continuation or resumption of dumping and injury on account of imports from China, if the duties are revoked, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended in respect of imports from China. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

51.2 Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the difference between the amount indicated in Col 9 of the table below and the landed value is recommended to be imposed on all imports of subject goods originating in or exported from China PR.

S. No.	Sub-heading or tariff item	Description of goods	Specifica- tion	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	2936 28 00 2309 90	Vitamin E all forms	100%	People's Republic of China	Any country	Any producer	Any exporter	25.54	KG	US Dollar
2	2936 28 00 2309 90	Vitamin E Acetate	100%	Any country	People's Republic of China	Any producer	Any exporter	25.54	KG	US Dollar

Note:- The amount for the purposes of column (9) above, for concentrations other than those specified in column (4), shall be calculated on pro rata basis.

52. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

53. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority